हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित हुआ है। इसको हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ युग माना जा सकता है, जिसमें पद्य के साथ-साथ गद्य, समालोचना, कहानी, नाटक व पत्रकारिता का भी विकास हुआ। यह कविता नए पुराने सभी कवियों द्वारा सत्ता के विरोध में लिखी गई कविता है।

लेकिन हम देखते हैं कि काव्य की धारा फिर से अपने आदर्श-काव्य की ओर मुड़ रही है। कवियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। नए-नए कवि और उस्ताद पैदा हो गए हैं। छन्दबद्ध रचना का चक्र फिर से चलने लगा है। गीत, सवैया, घनाक्षरी और दोहे जैसी विधाओं की तूती बोलने लगी है। यह वर्तमान की काव्यधारा है जिसे अदृष्टिगत नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत काव्य-सङ्कलन में ऐसे ही सप्तकवियों की रचनाओं को सङ्ग्रहीत किया गया है जो आधुनिक हिन्दी साहित्य की वर्तमान काव्य-धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रस्तुत सङ्कलन में गीत-ग़ज़ल और पद्यात्मक छन्दबद्ध या कुछ लयबद्ध गद्यात्मक रचनाओं को प्रश्रय दिया गया है।

(इसी कृति से)

सप्तकवि :

1. डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव
   अहमदाबाद, गुजरात
2. डॉ. भावना एन. सावलिया
   राजकोट, गुजरात
3. गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'
   इन्दौर, मध्य प्रदेश
4. डॉ. अरविन्द पराशर
   होशियारपुर, पंजाब
5. विनीता 'निर्झर'
   अजमेर, राजस्थान
6. गजराज सिंह 'धर्म'
   आगरा, उत्तर प्रदेश
7. भूपसिंह यादव
   फीरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

- डॉ. विनोद कुमार वर्मा
  विवेचक (बिलासपुर, छत्तीसगढ़)

संगिनी प्रकाशन
कार्यालय: 398ए, अंबेडकर नगर, विजय नगर, कानपुर-208005
मोबाइल: +91 9696555858, ई-मेल: sanginiprakashan@gmail.com
₹ =220/-

समकालीन विमर्श में

वर्तमान हिन्दी-काव्य

(सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन-द्वितीय)

सम्पादक-द्वय
डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव
एवं
डॉ. भावना एन. सावलिया

प्रकाशन : अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य संस्थान
गुजरात, अहमदाबाद

बड़े हर्ष की बात है कि 'समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी काव्य' के के सन्दर्भ में 'सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन' सम्पादक-द्वय डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव एवं डॉ. भावना एन. सावलिया द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। मेरी ओर से उक्त काव्य-सङ्कलन के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभेच्छु
– डॉ. अजय के. पटेल
प्राचार्य,
श्रीकलजीभाई आर. कटारा
आर्ट्स कॉलेज शामलाजी,
अरावली, गुजरात
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बोर्ड ऑफ स्टडी (पाठ्यक्रम समिति)
हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय,
पाटण, गुजरात

समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी-काव्य

(सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन-द्वितीय)

सम्पादक-द्वय

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव

एवं

डॉ. भावना एन. सावलिया

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य संस्थान

गुजरात, अहमदाबाद

Scanned by CamScanner

चेतावनी : सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र अहमदाबाद गुजरात होगा। इस सङ्कलन में प्रस्तुत रचनाओं में रचनाकारों के उनके अपने निजी भाव और विचार हैं। उनसे सम्पादक-द्वय या संस्थान के सहमत या असहमत होने से कोई सरोकार नहीं है।

ISBN : 978-93-94719-66-8

© डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव
(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशक :

Also available on: amazon.in

संगिनी प्रकाशन

कार्यालय: 398ए, अंबेडकर नगर, विजय नगर, कानपुर-208005
मोबाइल: +91 9696555858, ई-मेल: sanginiprakashan@gmail.com

संस्करण :

प्रथम - 2023

मूल्य :

सजिल्द : ₹ 220/- (दो सौ बीस मात्र)

आवरण सज्जा :

इंजी. रिन्की चन्द्रा

शब्द-सज्जा :

विद्या ग्राफिक्स, कानपुर

Samkalin Vimarsh mein Vartamaan Hindi-Kavya
Edited by : Dr. Chandrapalsingh Yadav
Dr. Bhavna N. Savalia

Scanned by CamScanner

समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी-काव्य

(सप्तकवि-काव्य-सङ्कलन-द्वितीय)

अनुक्रम

कवि-क्रम	पृष्ठ सङ्ख्या
◆ सम्पादकीय	7
◆ सङ्कलन के सन्दर्भ में	17
◆ रचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन	21
डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव	**31-36**
◆ काव्य-लघुकथा	32
◆ कैसा आज सवेरा आया	33
◆ साक़ी के पैमाने से	34
डॉ. भावना एन. सावलिया	**37-42**
◆ प्रभात वर्णन	38
◆ प्रेम है अनमोल धन ज्यों	39
◆ करे काम संसार में हम महान	40
◆ मदिरा सवैया	41
◆ सदा हमको हँसाया है	42
गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'	**43-48**
◆ जब मैंने देखा धुआँधार	44
◆ भारत का कीर्ति नाद	45
◆ शान्ति की सरिता	46
◆ पहले से ही टूट गए हो	48

Scanned by CamScanner